International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979
www.allsubjectjournal.com
Volume 2; Issue 12; December 2015; Page No. 115-120

असम प्रांत के संत कवि शंकरदेव और माधवदेव के रचनाओं में भारत वर्णनः एक अध्ययन

जयन्त कुमार बोरो

अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेज, कोकराझार, असम

आलेख सार

शंकरदेव और माधवदेव के आविर्भाव समय को असमीय साहित्य में मध्ययुग की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। यह समय भक्ति काल का समय रहा है। शंकरदेव ने समग्र उत्तरपूर्वी प्रांत में भक्ति आन्दोलन की लहर को फैलाया। तथा समस्त जनता को एक नये भक्ति मार्ग से जोड़ने का प्रयास किया। यह नवीन भक्ति मार्ग 'नव वैष्णव भक्ति मार्ग या धर्म' के नाम से जाना जाता है। शंकरदेव के शिष्य माधवदेव ने अपने गुरु के कार्य को और अधिक विस्तार किया। असम एक विविध जाति एवं जनजातियों वाला प्रांत है, इसकी जनताओं में जो मेल मिलाप देखने को मिलता है उसका एकमात्र श्रेय इन दो गुरुओं (शंकर और माधव) को ही जाता है। उनकी रचनाओं में भारत का वर्णिन मिलना सम्प्रदायिक सद्भावना, सांस्कृतिक और भाषा-भाषी एकता को प्रदर्शित करता है। 'नव वैष्णव धर्म' की प्रधान विशेषता है- 'एकेश्वरवाद' की स्थापना करना। इस भक्तिमार्ग को 'एक शरणनाम धर्म' अथवा 'ईश्वर के प्रति परम् आत्म-समर्पण करना का पक्षधर धर्म भी कहाँ जाता है।

मूल शब्दः- नव वैष्णव भक्ति, सम्प्रदायिक सद्भावना, सांस्कृतिक, एकेश्वरवाद आदि।

प्रस्तावना

शंकरदेव (सन् 1449 ई.) और माधवदेव (सन् 1489 ई.) दोनों को समस्त असम प्रांत में गुरु के रुप में सम्मानित किया जाता है। असम की सांस्कृतिक एकता को स्थापित करने का श्रेय दोनों गुरुओं को ही जाता है। शंकरदेव और माधवदेव दोनों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भक्ति की लहर को जनमानस तक फैलाया। भारत के उत्तरी प्रांत में बहती हुई भक्ति की धारा को असम की भूमि में भी प्रवाहित करवाया। शंकरदेव के शिष्य माधवदेव ने भी अपने गुरु का अनुसरण कर तथा उनको अपना सहयोग प्रदान किया। शंकरदेव के द्वारा चलाये गये *'नव वैष्णव भक्ति मार्ग'* को जनमानस ने सरलता से अपनाया और जिसके लिए दोनों गुरुओं ने सरलता का मार्ग चुना। *'नव वैष्णव भक्ति मार्ग'* वैष्णव धर्म ही है लेकिन यह धर्म ब्राह्मण्यवाद के कठोर धार्मिक नियमों के विरोध में एक प्रतिक्रिया स्वरुप आन्दोलन है। जिसे शंकरदेव ने तत्कालीन समय के समाज में व्याप्त विसंगतियों के विरोध में जागरण एवं धार्मिक परिवर्तन के दृष्टकोण से प्रचार किया था। *'नव वैष्णव भक्ति'* एक सरल और सीधा सा भक्ति मार्ग है जिसे कोई भी अपना सकता है। कबीर और शंकरदेव के निर्गुण भक्ति में काफी साम्य विचारधारायें है। कबीर ने *'निर्गुण भक्ति'* के प्रचार में जिस प्रकार समाज के सभी वर्गों का ईश्वर पर समान अधिकार बताया है, ठीक वैसे ही शंकरदेव ने भी *'नव वैष्णव भक्ति'* मार्ग में जाति-जनजातियों का एक समान अधिकार है तथा इस भक्ति मार्ग में किसी का भी निषेध नहीं करकर घोषित किया है। ब्राह्मण्य् धर्म की अपेक्षाकृत *'नव वैष्णव भक्ति'* ने साधारण लोगो को अधिक प्रभावित किया। दोनों गुरुओं ने इस भक्ति धारा को किसी एक वर्ग विशेष के चुंगल से निकालकर जन-जन तक पहुँचाया।

उद्देश्य

शंकरदेव और माधवदेव दोनों ही असमीया साहित्य के मुर्धन्य वैष्णव भक्त कवि है। शंकरदेव ने अपने भक्त मार्ग को चलाने के लिए निर्गुण भक्ति का सहारा लिया। शंकरदेव का भक्ति मार्ग निर्गुण तो है परन्तु वह वैष्णव भक्ति पर प्रतिष्ठत है। शंकरदेव ने अपनी रचना विशेषकर *'बरगीत'* और *'कीर्तन घोषा'* तथा माधवदेव विरचित *'बरगीत'* और *'नामघोषा'* में जिस रुप में भारत भूमि की प्रशंसा की है वह अनुठा है। तत्कालीन समय में दोनो कवियों ने भारत में जिस सद्भावाना को समन्वित करने का प्रयास किया था उसकी धारा आज भी बह रही है। आज एक जाति का दूसरे जाति के प्रति न कोई आदर है न ही कोई प्रेम शेष रह गया है। लेकिन आज हमें इक्कीसवीं सदी के लोगो को समझने की आवश्यकता है कि आज जिस असहिष्णुता की बात चल रही है वह सिर्फ एक राजनैतिक बहस है। इस बहस के कारण हमें अपनी साम्प्रदायिक एकता, सांस्कृतिक समन्वय आदि को पल में नष्ट नहीं कर देना चाहिए। वर्तमान समय पर भारत की एकता पर जो गरज़ आयी है उसके लिए हम भी जिम्मेदार है। हम अपने संस्कार भूल गये है। कबीर, तुलसी, नानक, सूर, शंकर, माधव आदि सभी को भूल गये है। तत्कालीन विषम परिस्थितियों में शंकरदेव और माधवदेव ने भारत की भूमि को सस्स्त संसार में पूण्य भूमि के रुप घोषित किया है, इसका एक मात्र यहीं कारण है कि भारत की एकता और अखण्डता कभी भी समाप्त नहीं होनी चाहिए। ऐसा होने पर शत्रुओं को फुट डालने के लिए अवसर प्राप्त होगा। गुरुओं की कहीं हुई बातों को यदि हम समझ सकेगे तो असहिष्णुता का माहौल समाप्त होकर पूनः सहिष्णुता की सुगंध भारत में फैलने लगेगा।

शोधविधि

प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है तथा यह विषय समीक्षात्मकता पद्धति की भी मांग रखता है।

शोध सामाग्री

प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। असमीया साहित्य के विविध ग्रन्थों में से आलेख को पुरा करने के लिए काफी मद्द मिली है। शंकरदेव के द्वारा लिखित *'बरगीत'* और *'कीर्तन घोषा'* तथा माधवदेव के द्वारा रचित *'बरगीत'* और *'नामघोषा'* को प्रमुख रुप से अध्ययन के लिए चयन किया गया है।

शंकरदेव और माधवदेव के *बरगीत, कीर्तनघोषा और नामघोषा* का संक्षिप्त परिचय

शंकरदेव और माधवदेव दोनो गुरुओं ने *'बरगीतों'* का प्रणयन किया है। शंकरदेव और माधवदेव के द्वारा रचित बरगीत एक भक्ति परक रचना है। अगर इनके बरगीत समुहों की विशेषताओं को देखा जाए तो उसमें हमें मुख्यतः कृष्ण वंदना, कृष्ण के रुप सौन्दर्य का वर्णन, कवि का दैन्य भाव, नाम महिमा, भक्ति की महत्ता, गोपी विरह और कहीं-कहीं हमें श्रीराम का वर्णन भी देखने को मिलता है। उपर्युक्त सभी विशेषताओं को दोनों महान् संतों ने अपने बरगीत का वर्ण्य विषय बनाया। शंकर और माधव के बरगीतों को कवि और भक्ति मानस की मनोविजय का काव्य कहाँ जा सकता है। *दोनों गुरुओं के बरगीतों के सम्बन्ध में असमीया साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. वाणीकान्त काकति का मानना है कि "शंकरदेव के और माध्वदेव के बरगीत उच्च नैतिक और आध्यात्मिक भावों पर प्रतिस्थित है। इसीलिए उन गीतों को बरगीत कहाँ जाता है। अंग्रेजी के कवि हेरिक (Herrick) ने भी आध्यात्मिक भाव पर आधारित कुछ कविता रचना कर उनको 'Noble Numbers' नाम दिया था। हमारे साहित्य में भी बरगीत 'Noble Numbers' है।"* [1] बरगीत की भाषा को ब्रजाबुलि कहाँ जाता है। यह हिन्दी, असमीया संस्कृत, ब्रज, बांग्ला, उड़िया, नेपाली आदि सभी भाषाओं के मिश्रण से बना हैं। असमीया साहित्य जगत् में *बरगीत* अपने साहित्यिक एवं सास्कृतिक महत्व को स्थापित करता है। *बरगीत* को आलोचक वाणीकान्त काकति ने अंग्रेजी में *noble numbers,* कालिराम मेधि ने *greats songs* या *song celestials,* इतिहासकार देवेन्द्रनाथ बेजबरुवा ने holy songs कहकर सम्बोधित किया हैं।

शंकरदेव के द्वारा रचित *'कीर्तन-घोषा'* में भगवान विष्णु के समस्त अवतारों का वर्णन कवि ने किया है। *भागवत के द्वादश स्कंध, श्रीमद्भागवतगीता, पद्मपुराण, ब्रह्मपुराण* आदि से सार तत्वों को ग्रहण कर कवि शंकरदेव ने प्रणयन किया । *'कीर्तन-घोषा'* में सांगीत्मकता के साथ-साथ साहित्यिकता भी मूल रुप से लक्षणीय है। इस ग्रंथ में असमीया लोकसंगीत को भी अनुभव किया जा सकता है। विषय-वस्तु के दृष्टिकोण से कीर्तन में विष्णु के विविध लीलाओं एवं अवतारों को अधिक स्थान दिया गया है। लेकिन लीला के साथ उपदेश, तत्वज्ञान, प्रार्थना, आदि को भी समावेश किया गया हैं।

माधवदेव के द्वारा रचित *'नाम-घोषा'* ग्रंथ आध्यात्मिकता का श्रेष्ठतम उदाहरण है। इस ग्रंथ को सांसारिक विषय-वासनाओं में युक्त आत्मा की आध्यात्मिक अभिव्यक्ति कहाँ जा सकता है। *'नाम-घोषा'* में गुरि महिमा, दास्यभाव और कृष्ण भक्ति की महिमा को देखा जा सकता है। *'नाम-घोषा'* का सौन्दर्य मात्र कोमलता एवं कठिनता तक ही सीमित नहीं है। इस ग्रंथ का प्रधान सौन्दर्य में भक्ति रस समाहित है।

उपर्युक्त ग्रंथों के प्रणयन का एक मात्र उद्देश्य *'नव वैष्णव भक्ति मार्ग'* की स्थापना करना था। *'कीर्तन-घोषा'* और *'नाम-घोषा'* जैसे सुन्दर ग्रंथों का प्रणयन असम में वैष्णव धर्म का प्रचार, धर्म शिक्षा, धार्मिक जीवन को उच्चता के शिखर पर पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया था।

शंकरदेव और माधवदेव की रचनाओं में भारत वर्णन

शंकरदेव और माधवदेव दोनों संत कवियों ने अपनी लेखनी के द्वारा रचनाओं में भारत वर्ष की प्रशंसा सर्वोत्तम भूमि के रुप में किया है। भाग्य के फल पर ही भारत भूमि में जंम लेने को मिलता है। शंकरदेव जी ने अपने ग्रंथ *'भागवत एकादश'* के त्रयोदश अध्याय में लिखा है कि-

भारत बरिष, कलियुग हेटो हरिनाम नरकाय।
चारिर संयोग महाभाग्य भैलो आउर आछा बाट चाइ।। [2]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् महाभाग्य होने पर ही भारतवर्ष, कलियुग, हरिनाम और नरकाय आदि का संयोग घटित होता है।

माधवदेव जी ने भी अपने ग्रंथ *'भक्ति रत्नावली'* में लिखा है कि –

देवसवे निश्चय गावय एहि गीत।
सेहि धन्य जार जंम भारत भूमित।।
भारतत नरजंम लोवार कारण।
साधिव पारिब जार जिटो प्रयोजन।।
पाय स्वर्ग मोक्ष पद वैकुण्ठो जाय।
भारत समान कर्म भूमि आन नाई।। [3]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् समस्त देवतागण भी निश्चय ही यहीं कामना के साथ गीत गाते है कि वह धन्य है जिसका जन्म भारत भूमि पर हुआ है। भारत भूमि में नर रुप में जंम लेने के कारण ही वह अपने समस्त प्रयोजनों एवं उद्देश्यों को पूरा कर सकेगा। और साथ ही स्वर्ग, मोक्ष, प्रभु चरण, वैकुण्ठ आदि को भी प्राप्त कर सकेगा। इस संसार में भारत के समान और कोई दूसरा कर्म भूमि नहीं है।

पृथ्वी के समस्त भू-खण्डों में भारतवर्ष को श्रेष्ठ कहने का तात्पर्य यहीं है कि भारत के समान आध्यात्मिक ऐश्वर्य तथा समृद्ध शाली ओर कोई स्थान नहीं है। युगों-युगो से इस भू-खण्ड पर पतित और शोषित लोगो के तारण के लिए ईश्वर अवतार ग्रहण किया है। अनेक ऋषि मूणियों ने इस भू-खण्ड पर जंम धारण कर युगो-यगो से भारत में ज्ञान की परमज्योति को जलाकर विश्व को प्रकाशित करने का किया है। भारत में वेद-वेदान्त, रामायण, पुराण, महाभारत, भागवत आदि जैसे महान् ग्रंथों का प्रणयन हुआ तथा उन ग्रंथों का चर्चा अनादि काल से अब तक चली आ रही है। तद्परि एस भारत भूमि में हुरिनाम रुपी अमृत की धारा चिरकाल से प्रवाहित होती हुई आ रही है।

भारत वर्ष में मनुष्य जंम लेना देवताओं के लिए भी दूर्लभ है। ब्रह्म आदि समस्त देवता गण इस पूण्य भूमि में जंम लेने के लिए इच्छुक रहते है। क्योंकि भारतवर्ष में नरतनू लाभ करके हरिनाम का कीर्तन कर देवतागण भी देवलोक को अतिक्रणम करते हुये वैकुण्ठ को प्राप्त करने की इच्छा रखते है। जिसके फलस्वरुप किसी भी काल में जीवन संसार में प्रत्यागमन नहीं होता। इसी कारण भारतवर्ष में जंम ग्रहण कर देवतागण भी हरिनाम का कीर्तन कर निर्वाण गति को प्राप्त करने के लिए कामना रखते है। शंकरदेव ने अपने ग्रन्थ *'भक्ति रत्नाकर'* में पारमार्थिक विचार के रुप में भारत भूमि को *"जम्बुद्वीप मध्यत भारत श्रेष्ठतर"* कहा है।

शंकरदेव के ग्रंथ *कीर्तन-घोषा* और *बरगीत* में भारत प्रशंसा

शंकरदेव जी ने अपने ग्रंथ *'कीर्तन घोषा'* के विविध खण्डों में भारत का वर्णन किया है। और भारत को समस्त संसार में एक पूण्य भूमि के में वर्णित करने का प्रयास किया। शंकरदेव ने अपने ग्रंथ *'कीर्तन-घोषा'* के *'अजामिल उपाख्यान खण्ड'* में लिखा है कि-

कोन दिने इटो, शरीर परय,
केतिक्षणे नेय यम।
आर कि सेन्हरे, भारत-भूमित,
इबाहा मनुष्य-जंम।।
कोटि कोटि जंम, अन्तरे जाहार,
आछे महापुण्य-राशि।
सि सि कदाचित, मनुष्य होवत,

भारत-बरिषे आसि।।
देवरो दूर्लभ इहेन जन्मक।
व्यर्थ करा कोन कामे।
गृहते थाकिया हरिक स्मरिया,
मोक्ष साधा हरि-नामे।। [4]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् कब इस शरीर का पतन होगा और कब इसे यम लेकर चला जाएगा यह निश्चित नहीं है। फिर कभी भारत भूमि में मनुष्य रुप में जंम लाभ करुगा यह भी आशा नहीं है। कोटि कोटि जंम के पश्चात् महापुण्य के बल पर भारतवर्ष में जन्म ग्रहण करने को मिलता है। एस प्रकार के देवों को भी दूर्लभ जीवन को व्यर्थ नहीं किया जाना चाहिए। शंकरदेव कहते है कि घर पर रहकर ही हरि को स्मरण कर, हरिनाम ले करके मुक्ति को प्राप्त कर लेना चाहिए।

शंकरदेव जी *'कीर्तन-घोषा'* के ही *'बलिचलन खण्ड'* में लिखा है कि –

जतेक संसार-नय, सवे स्वप्न मायामय,
अन्तके केशत आछे धरि।
भारतत जंम पाइ, विलम्बक नुयुवाइ,
सदाये घोषियो राम हरि।। [5]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् इस संसार की सभी वस्तुयें मायामय स्पप्न दृश्य के समान है। मृत्यु भी केशो को पकड़कर खींच रहा है। भारत भूमि में जंम लाभ कर भगवान की भक्ति में विलम्ब किये सदैव राम नाम का स्मरण करते रहना चाहिए।

'कीर्तन-घोषा' के ही *'शिशु लीला खण्ड'* में शंकरदेव ने लिखा है कि –

कृष्ण कथा शुनियों समाजे।
जंम लभि भारतर माजे।।
आक वृथा करा कोन कामे।
साधियों मुकुति हरि नामे।। [6]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् शंकरदेव जी कहके है कि क्यों भारत में जंम लाभ कर *नरजंम* को व्यर्थ कर रहे हो? हरिनाम के के अपने जीवन की मुक्ति की साधना को पूरा करो।

'कीर्तन घोषा' के ही *'रस क्रीड़ा खण्ड'* में शंकरदेव ने लिखा है कि –

कृष्ण किंकरे कहे शुना निरन्तर।
कलियुगे भाग्ये भारतत भैला नर।।
हरि भकतित जेवे करा दृढ़मति।
इजन्मत निश्चये परम पाइबा गति।। [7]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् कृष्ण किंकर शंकरदेव कहते है कि अविराम सुनो। बहुभाग्य क्रम के आधार पर ही कलियुग में भारतवर्ष पर जंम लेने के लिए सौभाग्य प्राप्त होता है। हरि भक्ति को दृढ़ मन से पालन करने पर इसी जंम में परम गति को लाभ किया जा सकता है।

'कीर्तन-घोषा' के *'मुचुकुन्द शक्ति खण्ड'* में शंकरदेव जी ने लिखा है कि –

भारते दूर्लभ, नरदेहा पाया,
नभजे तोमार पाव।
गृह-अंधकूपे, परिया थाकय,
पशुर जेन स्वभाव।। [8]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् जो मनुष्य नरतनु को पाकर भी तुम्हारे चरणों की स्तुति या सेवा नहीं करता है वह भीषण अंधकूप में पड़े रहकर पशु तुल्य होता है।

'कीर्तन-घोषा' के ही *'नारद कृष्ण दर्शन खण्ड'* में इस प्रकार से कहाँ है कि

जानिया सवे एरा भास-भूस।
भाग्येसे भारते भैला मानुष।।
आक वृथा करा विषय-भोले।
माणिकक बिका काचर मोले।। [9]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् विषय-वासना को त्याग करो। भाग्य के बल पर मनुष्य रुप में भारत में जंम लेने को मिलता है। विषय-वासनाओं में फस कर रहने पर भारत में मणि रुप में प्राप्त किया गया नर शरीर कछुआ के मूल्य पर बेचना जैसे होगा।

'कीर्तन-घोषा' के ही *'वेद शक्ति खण्ड'* में शंकरदेव ने कहा है कि –

भारते मनुष्य जंम नुहिके सेहुरे।
तोमाक नभजि आत्मघात करि मरे।। [10]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् सरलतापूर्वक भारतवर्ष में जंम प्राप्त नहीं किया जा सकता। भारत में जंम ले के भगवान की सेवा, भजन नहीं करने का अर्थ होगा आत्मघाती होकर मरना।

शंकरदेव के ग्रंथ *बरगीत* में भारत प्रशंसा

महापुरुष शंकरदेव द्वारा विरचित एक ही बरगीत के पद में भारतवर्ष की चर्चा की है। शंकरदेव और माधवदेव दोनो संतों ने अपनी रचनाओं में भारतवर्ष का वर्णन किया है। कहने का अभिप्राय यहीं है कि दोनों संतों ने अपने जीवन काल में भारत के विभिन्न प्रांतों का भ्रमण किया था, जिसका प्रभाव उनकी रचनाओं में भारत प्रशंशा के रुप में झलकता है। महापुरुष शंकरदेव की समस्त बरगीतों में से एक ही स्थल पर भारत की चर्चा करते हुये कहते है कि-

ध्रुव– *बेसायो भारते हाट आउरे बेलि नाट।*
चलिते निकट भयो भरा दियो झान्टे।।

पद- *भारत हाटत आछे अनेक दोकानि।*
निचिनि किनिले पुनु मिलिबे विधिनि।। .
जैसे तेते नथाकय हरिनाम रत्न।
महन्त दोकानि राखे करि मही यत्न।।
साधु दोकानिर संगे करिया यतन।
जावे बेलि तावे लेहु राम नाम रतन।।
भारत हाटत नर-नाव पचि जाय।
हुयो सावधान कृष्ण किंकर गाय।। [11]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

शब्दार्थ- *बेसोयो- बेचना, व्यवसाय करना; हाट- बजार; आउर- और; बेलि- समय; नाटे- पर्याप्त न होना; चलिते- चलने के लिए, चलने का समय; निकट भयो- निकट पहुँचना; भरा दियो- भर लेना; झान्ते- जल्दी ही; जावे बेलि तोवे लेहु- जब तक समय है तब तक ले लो; नरनाव- नर शरीर।*

अर्थात् शंकरदेव भक्त जनो से कहते है कि भारत के बजार में जल्दी से व्यापार कर लो, क्योंकि समय बहुत कम है जाने का समय निकट आ गया है। इसीलिए जल्दी जल्दी सारी वस्तुओं को नाव में भर लो। इस भारत में बहुत से साधु–असाधु जैसी व्यापारी है, बिना पहँचाने वस्तु खरीदने पर बाद में पछताना पड़ेगा और विप्रत्ति भी आयेगी। सभी के पास हरिनाम रुपी रत्न नहीं रहता। साधु महन्त रुपी दुकानदार ही इसे बड़े यत्न कर अपने पास सम्भाल कर रख पाते है। ऐसे दुकानदार का सगंत लाभ कर समय रहते ही रामनाम रुपी रत्न को यत्न पूर्वक संग्रह कर लो। भारतवर्ष के हाट में नर तनु रुपी नाव सड़ने लगा है। इसीलिए परमात्मा श्रीकृष्ण कहते है कि सावधान होकर उसी नाव रुपी शरीर के रहते ही सारा काम कर लो।

माधवदेव के बरगीतों के पदों में भारतवर्ष की चर्चा

माधवदेव ने भी अपनी सभी रचनाओं के विविध स्थलों पर भारत वर्ष की प्रशंसा आध्यात्मिक एवं हरिभक्ति के दृष्टिकोण से किया है। उनके द्वारा रचित *'बरगीत'* और *'नामघोषा'* के पदो में भारतभूमि में जंम प्राप्त कर हरि भक्ति में लीन रहने की चर्चा की है। गुरु माधवदेव ने भारत भूमि को हरिभरक्ति और आध्यात्मिकता का सर्वोत्म स्थान के रुप में घोषित किया है। उनके द्वारा अधोलिखित बरगीत और नामघोषा के पद समुहों में भारत भूमि में जंम लेकरके हरि भक्ति करने की सौभाग्य का वर्णन किया है।

माधवदेव ने अपने *'बरगीत '* में भारतवर्ष की चर्चा करते हुये लिखा है कि-

धन्य धन्य कलिकाल धन्य नरतनू भाल
धन्य धन्य भारतबरिषे।
तप जप यज्ञ तेजि तोमार चरणे भजि।
तूवा नाम घोषिबो हरिषे।। [12]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् कलियुग धन्य, भारतवर्ष धन्य और मनुष्य जंम भी धन्य है, जप, तप, यज्ञ आदि सभी को छोड़कर तुम्हारे (हरि) चरणों को भजकर आनन्द मन से तुम्हारा ही नाम स्मरण करना चाहिए।

दूर्लभ मनुष्यतनु भारतेलभिया पुनु
नाम लैते नपारों तोमारे।। [13]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् भक्तों को सम्बोधित करते हुये माधवदेव जी कहते है कि भारतभूमि में इस दूर्लभ मनुष्य जीवन के जंम को लेकर भी मैं तुम्हारा नाम नहीं ले पाया।

भारत मानबी तनु तरणी उपाम
देह भरा कलिको धरम हरिनाम।। [14]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् भारतवर्ष में मानव शरीर के रुप में जंम लेने का अर्थ होगा कि संसार रुपी समुद्र को पार करने के श्रेष्ठ नौका के समान है। समुद्र को पार करने के उद्देश्य से जैसे एक नौका में सभी वस्तुओं को चढ़ा लेने की भाँति तुम भी इस शरीर में हरिनाम को भरपूर चढ़ा लो।

सेवहु मन माधव तब किछुरि विषय पाशा।
भारत पुनु माधवी तनु आवरि नहि आशा।। [15]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् हे! मन अभी सांसारिक विषय वासनाओं माधव की सेवा में अपने को संलग्न कर लो। भारत भूमि में पुनः मानवी जंम मिलेगा की नहीं यह आशा नहीं किया जा सकता।

व्यवसा करिते पाइला नरतनु नाव।
जावे नाहि पचे पाव माणिक बेसाव।।
रत्नर पाइला द्वीप भारते आसिया।
लैयो रामनाम भाई मानिक बाछिया।। [16]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् राम नाम की व्यवस्था करने के लिए ही इस मनुष्य शरीर रुपी नाव को प्राप्त किया है। इस नाव के सड़ जाने से पहले ही मणि रुपी राम नाम की व्यवस्था कर लो। माधवदेव राम भक्ति को महत्व देते हुये कहते है कि तुम्हें राम नाम रुपी रत्न भारतवर्ष में मिला है तथा सांसारिक जल में शरीर रुपी नाव को रोक करके अपने जीवन में चुन-चुन कर भर लो।

कलियुगे नरतनु भारतत पाया पुनु
तुवा गुण नाम नाहिं लियो।
परम अमियारस तेज तुवा नाम यश
विषय गरल हामु पियो।। [17]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् माधवदेव कहते है कि कवियुग में भारत जंम प्राप्त कर भी यदि तुम्हारा (राम) गुण-कीर्तन, स्मरण आदि नहीं किया। मैं तुम्हारा नाम यश रुपी श्रेष्ठ अमृतरस को त्याग कर जीवन भर विषय भोग रुपी विष पान ही करता रहा।

माधवदेव के ग्रंथ *नाम-घोषा* के पदो में भारत प्रशंसा

गुरु माधवदेव ने अपने ग्रंथ नामघोषा के पदों मे भारतभूमि में जंम लेकर हरिभक्ति करने की चर्चा विविध रुपो में किया है-

भारत रत्न द्वीप मनुष्य शरीर नौका
राम नाम महारत्न सार।
हेनय वणिज्य पाइ जिटोजने नकरय
तार परे दुखी नाहि आर।। [18]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् भारतवर्ष रत्न के द्वीप स्वरुप और मनुष्य का शरीर नौका स्वरुप है, तथा संसार का सार तत्व (वस्तु) महारत्न रुपी राम नाम भारतवर्ष में ही है। जो मनुष्य शरीर रुपी नौका द्वारा रत्नमय द्वीप भारत भूमि में महारत्न रुपी रामनाम का व्यापार नहीं करता है उससे दुखी इस संसार में ओर कोई नहीं है।

भारत भूमित जंम लभिया
नभजे हरि चरणे।
सिटौ ज्ञान शून्य पशुता अधम
जंम लभिले केने।। [19]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् जो भारतवर्ष में जंम प्राप्त कर हरि के चरणों की वंदना नहीं करता है, वह मनुष्य ज्ञानशून्य, पशुओं से भी अधम होता है। उसका मनुष्य योनि में जंम लेना भी कुछ काम न आया।

आपुन जनम भारत भूमित
लभिलेक जिटो नर।
हरिक नभजि करिले विफल
सिटो शोच्य समस्तर।। [20]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् भारतवर्ष में जंम प्राप्त करके कृतार्थ हुआ, लेकिन जिस मनुष्य ने भारत में जंम लेकर ईश्वर की भक्ति नहीं किया उसका जीवन को विफल किया है, उससे बड़ा और किसका इस संसार में नीच और घृणा का जीवन हो सकता है। असका इस प्रकार का आचरण सभी के लिए दुःख का विषय है।

भारतबरिष धन्य कलियुग हरि हरि हरि हरि ए।
हरि हरि हरि ब्रह्मार प्रार्थना नर-तनु अनुपाम।
हरित एकान्ते शरण पशिया हरि हरि हरि हरि ए।
हरि हरि हरि धर्म शिरोमणि घुषियो हरिर नाम।। [21]

(हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् कवि माधवदेव कहते है कि भारतवर्ष धन्य, कलियुग धन्य। भारतवर्ष में नर शरीर प्राप्त करने के लिए स्वयं ब्रह्मा भी प्रार्थना करते है। भारतवर्ष में जंम धारण कर सभी धर्मों के शिरोमणि हरि के चरणों में एकांतभाव से अपने मन को समर्पित कर देना चाहिए।

भारत वर्णन का प्रसंग इस बात को स्थापित करता है कि तत्कालीन समय में संतों और कवियों ने भारत की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को अनुभव किया था। शंकरदेव और माधवदेव के रचनाओं में भारत का प्रसंग आना हमारी एकता को प्रकाशित करता है। हम चाहे भारत के जिस भू-भाग में रह रहे हो लेकिन हमारी धार्मिक भावना, दार्शनिकता, सास्कृतिक मूल्य की अपना एक पहचान है। जिस कारण भारत सदियों से अकसूत्र पिरोया हुआ है।

उपसंहार

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहाँ जा सकता है कि भारत के उत्तरपूर्वी प्रांत असम में जंमे भक्त कवि शंकरदेव और माधवदेव दोनों गुरुओं ने *भारत*वर्ष को विश्व के विविध भू-खण्डों में श्रेष्ठ पूण्य भूमि के रुप में अपनी रचनाओं में वर्णित किया है। यह विषय से यदि समग्र भारत वर्ष के लोग अवगत होते है तो भारत के सभी जनता दोनों गुरुओं के प्रति आकृष्ट होगे। तथा वर्तमान समय में जो असिहुष्णता का वातावरण जो छाया हुआ है उससे भी उबड़ने में काफी सहायता मिल सकेगा। तत्कालीन समय में असम जैसे सुदूर प्रांत में शंकरदेव और माधवदेव ने आध्यात्मिक चिन्तन और सांस्कृतिक भाव बोध के द्वारा *असम* को भी भारत के अभिन्न अंग के रुप में स्थापित करने का प्रयास किया है तथा समस्त असम वासियों को भारतवासियों को भारत का नागरिक होने पर गौरव अनुभव करने की शिक्षा दी है। जिसका प्रभाव युगों-युगों से असमवासियों के मध्य आज तक प्रवाहित हो रहा है। दोनों गुरुओं ने अपनी रचनाओं में *भारत की प्रशंसा* भारत वासियों के मध्य समन्वय की भावना को स्थापित करता है। गुरु शंकरदेव और माधवदेव ने भारत भूमि में जंम लेना जीवन का पूण्य फल बताया है तथा इस जीवन को निर्थक नहीं जाने देना चाहिए। जीवन के समस्त कार्यो के साथ-साथ मनुष्यों को भगवान की भक्ति करना भी परम आवश्यक हैं।

पादटीका

1. *भूमिका, प्रबन्ध गानर परम्परात बरगीत, सम्पादकः बापचन्द्र महन्त, प्रथम संस्करण- अगस्त 1992, प्रकाशकः स्टुडेन्ट स्टोरस, कॉलेज होस्टेल रोड, गौहाटी।*
2. *भागवत एकादश – शंकरदेव।*
3. *भक्ति रत्नावली – माधवदेव।*
4. *कीर्तन-घोषा के अजामिल उपाख्यान खण्ड से, श्रीश्री शंकरदेव रचित कीर्तनघोषा और श्रीश्री माधवदेव रचित नाम-घोषा, सम्पादक- साहित्यचार्य जतीन्द्रनाथ गोस्वामी, प्रकाशक - ज्योति प्रकाशन, गौहाटी, पद संख्या- 40-41, पृष्ठ संख्या- 53-54.*
5. *वहीं, (कीर्तन-घोषा के बलिचलन खण्ड से), पद संख्या-,15, पृष्ठ संख्या- 155.*
6. *वहीं, (कीर्तन-घोषा के शिशु लीला खण्ड से), पद संख्या- 100, पृष्ठ संख्या- 183.*
7. *वहीं, (कीर्तन-घोषा के रस क्रीड़ा खण्ड से), पद संख्या- 200, पृष्ठ संख्या- 242.*
8. *वहीं, (कीर्तन-घोषा के मुचुकुन्द शक्ति खण्ड से), पद संख्या- 30, पृष्ठ संख्या- 331.*
9. *वहीं, (कीर्तन-घोषा' के नारद कृष्ण दर्शन खण्ड' से), पद संख्या- 50, पृष्ठ संख्या- 368.*
10. *वहीं, (कीर्तन घोषा के वेद शक्ति खण्ड से), पद संख्या- 10, पृष्ठ संख्या- 408.*
11. *प्रबन्ध गानर परम्परात बरगीत (शंकरदेव के बरगीत खण्ड से), सम्पादक- बापचन्द्र महन्त, प्रथम संस्करण- अगस्त 1992, प्रकाशकः स्टुडेन्ट स्टोरस, कॉलेज होस्टेल रोड, गौहाटी, पृष्ठ संख्या-* 103.
12. *वहीं, (माधवदेव के बरगीत खण्ड से),पृष्ठ संख्या-*122.
13. *वहीं, पृष्ठ संख्या- 126.*
14. *वहीं, पृष्ठ संख्या- 141.*
15. *वहीं, पृष्ठ संख्या- 147.*
16. *वहीं, पृष्ठ संख्या- 152.*
17. *वहीं, पृष्ठ संख्या- 130.*
18. *श्रीश्री शंकरदेव रचित कीर्तन-घोषा और श्रीश्री माधवदेव रचित नाम-घोषा, सम्पादक- साहित्यचार्य जतीन्द्रनाथ गोस्वामी, प्रकाशक-ज्योति प्रकाशन, गौहाटी, पद संख्या- 128, पृष्ठ संख्या- 29.*
19. *वहीं, पद संख्या- 281, पृष्ठ संख्या- 60.*
20. *वहीं, पद संख्या- 300, पृष्ठ संख्या- 64.*
21. *वही, पद संख्या-719 , पृष्ठ संख्या-133.*

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. वर्मन, शिवनाथ, सम्पादक, प्रथम संस्करण, जून- 1991, *शंकरदेव, असमीया साहित्यर बुरंजी*, प्रकाशकः आनन्दराम बरुवा भाषा-कला संसकृति संस्था, उत्तर गौहाटी – 30, असम।
2. महन्त, बापचन्द्र, द्वितीय संस्करण, अक्टूबर- 2012, प्रबन्ध गानर परम्परागत बरगीत, प्रकाशकः बनलता, नतुन बजार, डिबरुगढ़ – 01, असम।
3. महन्त, बापचन्द्र, सम्पादक, प्रथम संस्करण, अगस्त-1992, बरगीत, प्रकाशकः स्टुडेन्ट स्टोरस, कॉलेज होस्टेल रोड, गौहाटी – 01, असम।
4. शर्मा, कुसुम चन्द्र, प्रथम संस्करण, अक्टूबर- 2004, *शंकरदेव साहित्यर आभाख, वैष्णव भक्तिवाद शंकरदेव आरु माधवदेवर साहित्य आलोचना*, प्रकाशकः श्रीमती कामेश्वेरी देवी, हेमन्तिका, जापारकुसि, नलवारी, असम।

5. काकति, डॉ. वाणीकान्त, पंचम संस्करण, अगस्त- 2011, *बरगीत शीर्षक प्रबन्ध, पुरनि असमीया साहित्य*, प्रकाशकः राजेन्द्र प्रसाद मजुमदार, असम प्रकाशन परिषद, गौहाटी– 21, असम।
6. गोस्वामी, साहित्यचार्य जतीन्द्रनाथ, सम्पादक, सप्तम संस्करण-2007, *श्रीश्री शंकरदेव रचित कीर्तन-घोषा और श्रीश्री माधवदेव रचित नाम-घोषा*, प्रकाशक- ज्योति प्रकाशन, पानबजार, गौहाटी-01, असम।
7. नेउग, महेश्वर, लेखक, *श्रीश्री शंकरदेव*, अष्टम संस्करण-2006, प्रकाशक- चन्द्र प्रकाश, पानबजार, गुवाहाटी- 01, असम।